# NCERT

# सामान्य-ज्ञान

# GENERAL KNOWLEDGE

**समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु उपयोगी**


**प्रधान सम्पादक**

आनन्द कुमार महाजन

**संपादन एवं संकलन**

परीक्षा विशेषज्ञ समिति

**कम्प्यूटर ग्राफिक्स**

बालकृष्ण, पंकज कुशवाहा

**सम्पादकीय कार्यालय**

**12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002**

**9415650134**

**Email : yctap12@gmail.com**

**website : www.yctbooks.com/www.yctfastbook.com/www.yctbooksprime.com**



**© All rights reserved with Publisher**



**प्रकाशन घोषणा**

प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने ओम साई ऑफसेट, प्रयागराज से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।



इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है

फिर भी किसी त्रुटि के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।



**मूल्य : 195/-**

# विषय-सूची


- **इतिहास (भारत एवं विश्व)........ 3-51**
  - प्राचीन इतिहास........ 3
  - मध्यकालीन इतिहास........ 16
  - आधुनिक इतिहास एवं स्वतंत्रता आंदोलन........ 28
  - विश्व इतिहास........ 48
- **भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था........ 52-65**
- **भूगोल (भारत एवं विश्व)........ 66-92**
  - भारत का भूगोल........ 66
  - विश्व का भूगोल........ 82
- **सामान्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी........ 93-141**
  - भौतिक विज्ञान........ 93
  - रसायन विज्ञान........ 100
  - जीव विज्ञान........ 117
  - कम्प्यूटर........ 132
  - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी........ 136
- **पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी........ 142-158**
- **भारतीय अर्थव्यवस्था........ 159-183**
- **खेल........ 184-187**
- **विविध (परंपरागत सामान्य ज्ञान)........ 188-208**

# इतिहास (भारत एवं विश्व)

# प्राचीन इतिहास

## प्रागैतिहासिक काल

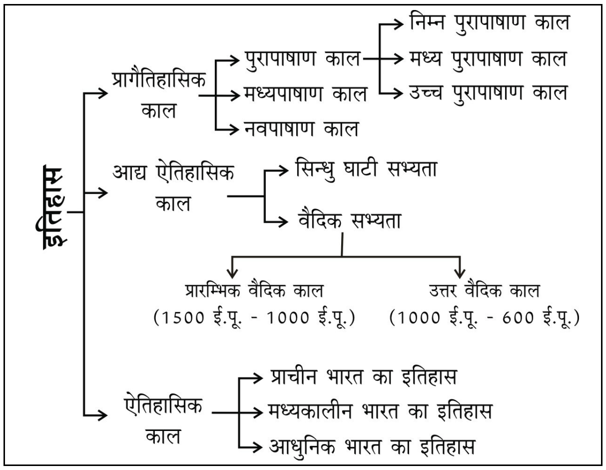


| काल | स्थल | प्राप्ति |
|---|---|---|
| पुरापाषाण | भीमबेटका | भीमबेटका गुफा चित्र |
| मध्य पाषाण | सराय नाहर राय, महदहा | मानव के अस्थिपंजर का पहला अवशेष |
| | चोपानी माण्डो | वन्य-धान का प्रमाण |
| | आदमगढ़, बागोर | पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य |

| | | |
|---|---|---|
| नव पाषाण (इस काल की प्रमुख देन है कृषि का विकास, आग का सर्वप्रथम प्रयोग, पहिए का आविष्कार) | कोल्डिहवा | सर्वप्रथम चावल का साक्ष्य |
| | बुर्जहोम | मानव कंकाल के साथ कुत्ते के कंकाल का अवशेष |
| | चिरांद | पशु हड्डी तथा हिरण की सींग के उपकरण |
| | संगन कल्लू, पिकलीहल, उत्तनूर | राख के टीले के साक्ष्य |

## सिन्धु सभ्यता

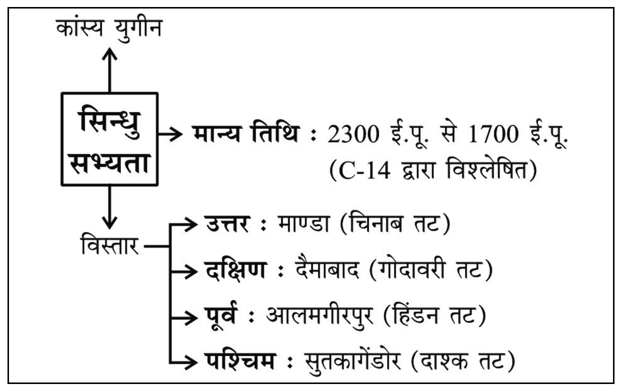


## सिन्धु सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

| स्थल | अवस्थिति | उत्खननकर्ता | खोज वर्ष | प्राप्ति |
|---|---|---|---|---|
| हड़प्पा | मांटगोमरी जिला, पंजाब (पाकिस्तान) रावी नदी के बाएं तट पर | दयाराम साहनी | 1921 | • विशाल अन्नागार<br>• शवाधान R-37<br>• नृत्य मुद्रा का खंडित धड़<br>• आयताकार मुहर पर स्त्री के गर्भ से निकलता पौधा |
| मोहन जोदाड़ो | सिन्धु नदी के दाएं तट पर लरकाना जिला (पाकिस्तान) | राखलदास बनर्जी | 1922 | • वृहत्त स्नानागार, विशाल अन्नागार<br>• नर्तकी की कांस्य मूर्ति<br>• एक मुद्रा पर पद्मासन की मुद्रा में विराजमान एक योगी का चित्र (इसके तीन मुख हैं।) |
| लोथल | भोगवा नदी तट, अहमदाबाद (गुजरात) | एस.आर. राव | 1957-58 | • तीन युगल समाधिकरण<br>• डॉक यार्ड (गोदीबाड़ा)<br>• मनके बनाने के कारखाने<br>• हाथी दाँत का पैमाना |
| धौलाबीरा | कच्छ का रन, गुजरात | आर.एस. विष्ट (1990-91)) | 1967-68 (जे.पी. जोशी) | • उन्नत जल प्रबन्धन व्यवस्था (शैलकृत जलकुंड)<br>• 10 चिह्नों वाला एक शिलालेख |
| कालीबंगा | हनुमानगढ़ (राजस्थान) | बी.बी. लाल, बी.के. थापड़ | 1961 | • कच्ची ईंटों के बने भवन<br>• जुते हुए खेत के साक्ष्य<br>• भूकम्प आने के साक्ष्य<br>• प्रायः सभी घरों में कुंए |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| राखीगढ़ी | घग्गर या सरस्वती नदी तट, हिसार (हरियाणा) | सूरजभान | 1969 | • भारत में स्थित सबसे बड़ा सैंधव स्थल |
| बनावली | फतेहाबाद, हरियाणा | आर.एस. विष्ट | 1973-74 | • पक्की मिट्टी की बनी हल प्रतिकृति |
| रोपड़ | सतलज नदी तट, पंजाब | यज्ञदत्त शर्मा | 1953-56 | • मनुष्य के साथ पालतू कुत्ता दफनाए जाने का साक्ष्य |

**सिन्धु सभ्यता के प्रमुख स्थल एवं उनसे सम्बन्धित नदी**

| स्थल | नदी |
|---|---|
| मोहनजोदड़ो | सिन्धु |
| हड़प्पा | रावी |
| वनावली | रंगोई |
| कालीबंगा | घग्घर |
| लोथल | भोगवा |
| माण्डा | चिनाब |
| रोपड़ | सतलज |
| भगवानपुरा | सरस्वती |
| सुतकागेंडोर | दाश्क |

**सिन्धु सभ्यता के विनाश के कारणों पर विद्वानों का मत**

| विनाश का कारण | विद्वान |
|---|---|
| आर्यों का आक्रमण | मार्टीमर ह्वीलर, गार्डन चाइल्ड, स्टुअर्ट पिगट |
| जलवायु परिवर्तन | अमलानन्द घोष, आरेल स्टाइन |
| बाढ़ | मार्शल, मैके, एस.आर. राव |
| भू-तात्विक परिवर्तन | एम.आर. साहनी, एच. लैम्ब्रिक, जी.एफ. डेल्स |
| अदृश्य गाज | एम. दिमित्रियेव |
| महामारी | के.यू.आर. कनेडी |

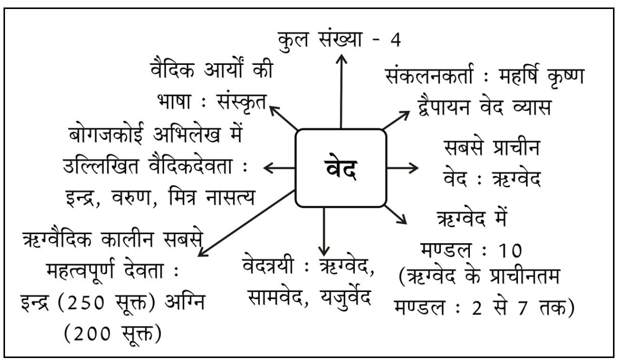


## ऋग्वेद के मण्डल

| मण्डल | रचयिता | विशेष |
|---|---|---|
| प्रथम | मधुछंदा, मेधातिथि, गौतमा आदि | – |
| द्वितीय | गृत्समद | – |
| तृतीय | विश्वामित्र | गायत्री मंत्र का वर्णन |
| चतुर्थ | वामदेव | कृषि से सम्बन्धित मंत्र |
| पंचम् | अत्रि | – |
| षष्ठम् | भारद्वाज | – |
| सप्तम् | वशिष्ठ | दासराज्ञ युद्ध का वर्णन |
| अष्ठम् | कण्व एवं अंगिरस | – |
| नवम् | ऋषिगण | सोम मण्डल कहा जाता है |
| दशम् | विमदा, इन्द्र, शची व अन्य | पुरुष सूक्त (चारों वर्णों : ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) का वर्णन |

**दाशराज्ञ युद्ध**
- परुष्णी (रावी) नदी के तट पर लड़ा गया
- यह युद्ध भरतों के राजा सुदास (त्रित्सुवंश/भरत वंश) तथा दस राजाओं के एक संघ के मध्य लड़ा गया
- दस राजाओं के संघ में पंचजन (अनु, द्रुहयु, पुरु, यदु, तुर्वसु) तथा पांच लघु जनजातियाँ (अलिन, पक्थ, भलानस, शिव, विषाणिन) शामिल थीं।
- सुदास के पुरोहित वशिष्ठ तथा दस राजाओं के संघ के पुरोहित विश्वामित्र थे
- युद्ध में सुदास की विजय हुयी।

## वैदिक साहित्य का विकास

| | |
|---|---|
| **संहिता** | ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद |
| **ब्राह्मण** | संहिता के भाष्य के रूप में लिखे गए ग्रन्थ |
| **आरण्यक** | ब्राह्मण ग्रन्थों के परिशिष्ट हैं, इनकी रचना वनों में हुई |
| **उपनिषद** | वेदों के अंतिम भाग थे। ये भारतीय दर्शन के स्रोत माने जाते हैं। |

## वेद और उपवेद

| वेद | उपवेद | ऋत्विक | संकलन |
|---|---|---|---|
| ऋग्वेद | आयुर्वेद | होता | ऋचाओं का संकलन |
| यजुर्वेद | धनुर्वेद | अध्वर्यु | यज्ञ कर्म से सम्बन्धित सूक्त |
| सामवेद | गंधर्ववेद | उद्गाता | गीतों का संकलन |
| अथर्ववेद | शिल्प वेद | ब्रह्म | तंत्र-मंत्र, रोग निवारक उपाय |

मूल वैदिक साहित्य को समझाने हेतु 6 वेदांग ग्रन्थ की रचना की गई -

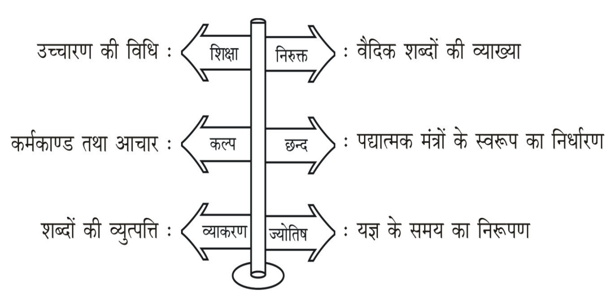

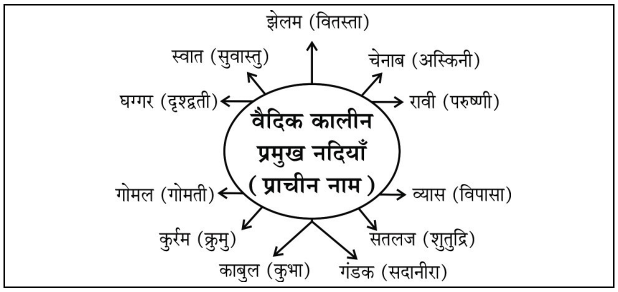


| विद्वान | आर्यों का मूल निवास |
|---|---|
| स्वामी दयानन्द सरस्वती | तिब्बत |
| बाल गंगाधर तिलक | उत्तरी ध्रुव |
| डी. एस. द्विवेदी | मुल्तान के निकट (देविका नदी) |
| पं. गंगानाथ झा | ब्रह्मर्षि देश |
| डॉ. अविनाश चन्द्र दास | सप्त सैन्धव प्रदेश |
| एल. डी. कल्ला | कश्मीर और हिमालय के पर्वतीय प्रदेश |
| डॉ. राजबली पाडेय | मध्य देश (उत्तर प्रदेश) |
| मैक्स मूलर | मध्य एशिया |
| गार्डन चाइल्ड | दक्षिणी रूस |
| एडवर्ड मेयर | पामीर का पठार |
| हर्ट एवं पेंका | जर्मनी |
| पी. गाइल्स | हंगरी |
| विलियम जोन्स एवं फिलिप्पो सेसटी | यूरोप |

■ पुराणों की रचना लोमहर्ष ऋषि और उनके पुत्र उग्रश्रवा द्वारा की गई है। पुराणों की संख्या 18 है –

| | |
|---|---|
| (1) मत्स्य | (2) मार्कंडेय |
| (3) भविष्य | (4) भागवत् |
| (5) ब्रह्मांड | (6) ब्रह्मवैवर्त |
| (7) ब्रह्मा | (8) वामन |
| (9) वराह | (10) विष्णु |
| (11) वायु | (12) अग्नि |
| (13) नारद | (14) पद्म |
| (15) लिंग | (16) गरूड़ |
| (17) कूर्म | (18) स्कन्द। |

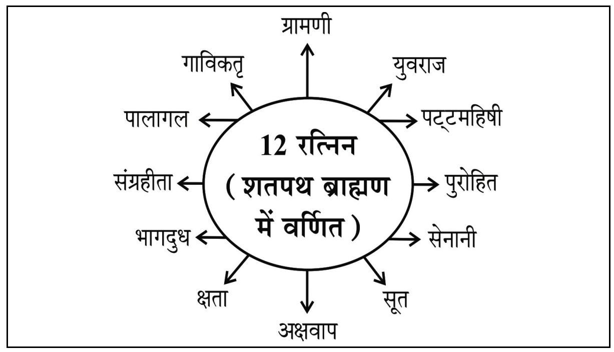


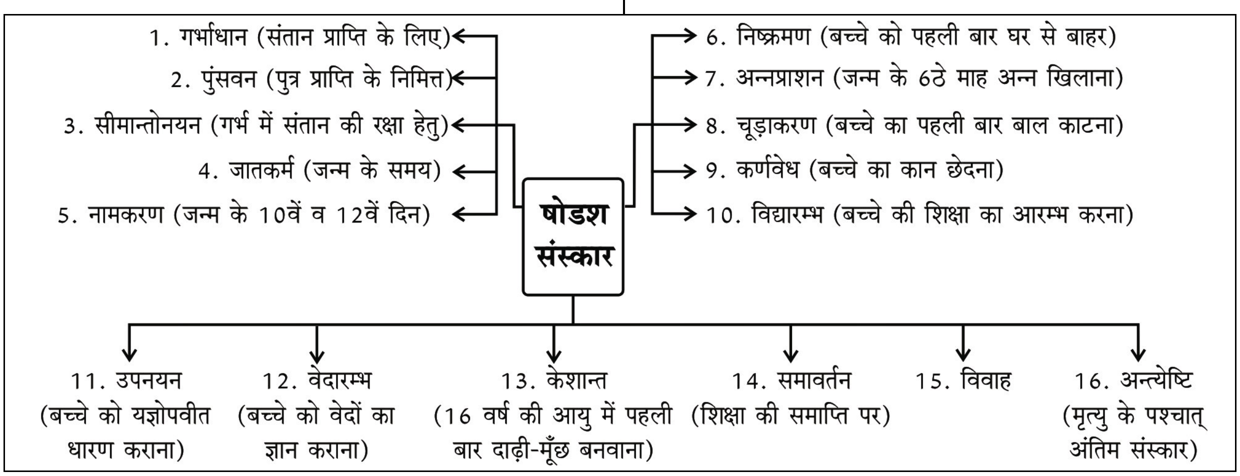


चारों आश्रमों का उल्लेख 'जाबालोपनिषद' में किया गया है-

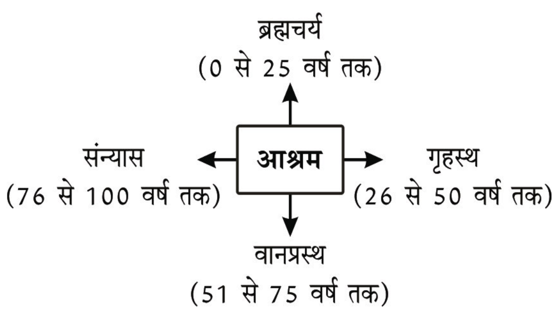


| वैदिक काल में विवाह के प्रकार | |
|---|---|
| **ब्रह्म विवाह** | वेदज्ञ एवं शीलवान वर के साथ कन्या का विवाह कर दिया जाता था |
| **दैव विवाह** | याज्ञिक अनुष्ठान सम्पन्न कराने वाले पुरोहित के साथ कन्या का विवाह होता था। |
| **आर्ष विवाह** | इसमें कन्या का पिता यज्ञ कार्य हेतु एक अथवा दो गाय/बैल के बदले अपनी कन्या का विवाह कर देता था। |

| | |
|---|---|
| | विवाह का प्रस्ताव विवाहार्थी की तरफ से आता था कि दोनों साथ मिलकर सामाजिक एवं धार्मिक कार्य करें। |
| **असुर विवाह** | इसमें धन लेकर कन्या का विवाह कर दिया जाता था। |
| **गन्धर्व विवाह** | माता-पिता के विरुद्ध, यह प्रेम विवाह था। |
| **राक्षस विवाह** | इसमें बलपूर्वक कन्या का अपहरण करके उसके साथ विवाह कर लिया जाता था। |
| **पैशाच विवाह** | सोती हुई, बेहोश या पागल कन्या के साथ छल करके समागम स्थापित कर विवाह करना। |

| वेद | शाखा | ब्राह्मण | आरण्यक | उपनिषद | विशेष |
|---|---|---|---|---|---|
| ऋग्वेद | • शाकल<br>• वाष्कल<br>• आश्वलायन<br>• शांखायन<br>• माण्डूकायन | • ऐतरेय<br>• कौषीतकी (शंखायन) | • ऐतरेय<br>• कौषीतकी | • ऐतरेय<br>• कौषीतकी | • ऐतरेय ब्राह्मण में राजसूय यज्ञ एवं सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग का वर्णन मिलता है। |
| यजुर्वेद | • कृष्ण यजुर्वेद - काठक<br>- कपिष्ठल<br>- मैत्रायणी<br>- तैत्तिरीय | • तैत्तिरीय | • तैत्तिरीय<br>• मैत्रायणी | • तैत्तिरीय<br>• मैत्रायणी<br>• श्वेताश्वर<br>• कठोपनिषद | • 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' कथन वृहदारण्यक उपनिषद से लिया गया है।<br>• शतपथ ब्राह्मण में याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद, जलप्लावन की कथा, विदेह माधव की कथा, पुरुवा-उर्वशी आख्यान का उल्लेख है।<br>• वृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य-गार्गी संवाद है।<br>• कठोपनिषद् में यम-नचिकेता संवाद का वर्णन है।<br>• स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार तैत्तिरीय उपनिषद् देता है। |
| | • शुक्ल यजुर्वेद - कण्व (वाजसनेयी संहिता)<br>- माध्यन्दिन | • शतपथ | • वृहदारण्यक | • ईशोपनिषद<br>• वृहदारण्यक | |
| सामवेद | • कौथुम<br>• राणायनीय<br>• जैमिनीय | • पंचविंश (तांड्य)<br>• छान्दोग्य<br>• जैमिनीय<br>• षड्विंश | • छान्दोग्य<br>• जैमिनीय | • छान्दोग्य<br>• केन | • छान्दोग्य उपनिषद् सबसे प्राचीन उपनिषद है। सर्वप्रथम इसी उपनिषद् में 'कृष्ण' का उल्लेख है। इसमें सत्यकाम-जावाल कथा, उद्दालक आरुणि व श्वेत केतु संवाद का उल्लेख है।<br>• ब्रह्मचर्य, गृहस्थ एवं वानप्रस्थ नामक तीन आश्रमों का उल्लेख 'छान्दोग्य उपनिषद्' में है। |
| अथर्ववेद | • शौनक<br>• पिप्पलाद | • गोपथ | • | • मुण्डको<br>• माण्डूक्य<br>• प्रश्न | • मुण्डकोपनिषद् में 'सत्यमेव जयते' का उल्लेख है सबसे छोटा उपनिषद् 'माण्डूक्य' है। |

## जैन धर्म

| क्र.सं. | जैन तीर्थंकर | प्रतीक चिह्न |
|---|---|---|
| 1. | ऋषभदेव | वृषभ |
| 2. | अजीतनाथ | हाथी |
| 3. | संभवनाथ | अश्व |
| 4. | अभिनंदन | बन्दर |
| 5. | सुमतिनाथ | क्रौंच पक्षी |
| 6. | पद्म प्रभु | कमल |
| 7. | सुपार्श्वनाथ | स्वास्तिक |
| 8. | चन्द्रप्रभु | अर्द्धचन्द्र |
| 9. | पुष्पदत्त/सुविछिनाथ | मकर |
| 10. | शीतलनाथ | श्रीवस्त |
| 11. | श्रेयांसनाथ | खड़ग/गैंडा |
| 12. | वासुपूज्य | भैंसा |

| | | | 
|---|---|---|
| **13.** | विमलनाथ | वाराह |
| **14.** | अनंतनाथ | बाज |
| **15.** | धर्मनाथ | वज्रदंड |
| **16.** | शान्तिनाथ | हिरन |
| **17.** | कुंभनाथ | बकरा |
| **18.** | अर्हनाथ | मत्स्य |
| **19.** | मल्लिनाथ | कलश |
| **20.** | मुनिसुव्रत | कछुआ |
| **21.** | नमिनाथ | नीला कमल |
| **22.** | अरिष्टनेमी/नेमिनाथ | शंख |
| **23.** | पार्श्वनाथ | सर्प |
| **24.** | महावीर | सिंह |

**महावीर स्वामी परिचय**

- **ज्ञान प्राप्ति :** जृम्भिक ग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी तट पर, शाल वृक्ष के नीचे
- **प्रथम उपदेश :** राजगृह में बराकर नदी तट पर
- **उपदेश दिया :** प्राकृत (अर्धमागधी) भाषा में
- **मृत्यु :** 527 ई.पू. (पावा में मल्ल गणराज्य के सस्टिपाल के राजप्रसाद में)
- **जन्म :** 599 ई.पू.
- **जन्मस्थल :** कुण्ड ग्राम (वैशाली)
- **पिता :** सिद्धार्थ (ज्ञातृक कुल के प्रधान)
- **माता :** त्रिशला अथवा विदेहदत्ता (लिच्छवी के राजा चेतक की बहन)
- **बचपन का नाम :** वर्धमान
- **पत्नी :** यशोदा (कुडिण्य गोत्र की कन्या)
- **पुत्री :** अणोज्जा अथवा प्रियदर्शना
- **दामाद एवं प्रथम शिष्य :** जामालि

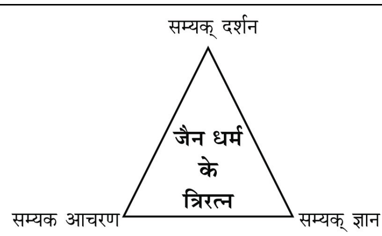


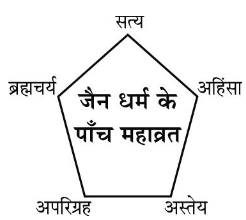


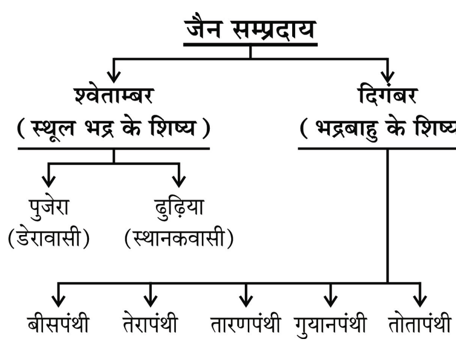


| श्वेताम्बर | दिगम्बर |
|---|---|
| **(i)** श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। | पूर्णतः नग्न रहते हैं। |
| **(ii)** महावीर स्वामी को विवाहित मानते हैं। | महावीर स्वामी को अविवाहित मानते हैं। |
| **(iii)** 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ को स्त्री मानते हैं। | मल्लिनाथ को पुरुष मानते हैं। |
| **(iv)** स्त्रियों का मोक्ष प्राप्ति संभव है। | स्त्रियों हेतु मोक्ष संभव नहीं है। |
| **(v)** प्रमुख केन्द्र गिरनार है। | प्रमुख केन्द्र पुण्ड्रवर्धन (बंगाल) है। |

**प्रमुख जैन ग्रन्थ**

| ग्रंथ | रचनाकार |
|---|---|
| परिशिष्ट पर्वन | हेमचंद |
| कल्पसूत्र | भद्रबाहु |
| न्यायावतार | सिद्धसेन दिवकर |
| न्यायदीपिका | धर्मभूषण |
| द्रव्य संग्रह | नेमिचंद्र |
| स्यादवाद मंजरी | मल्लिसेन |
| तत्वार्थ सूत्र | उमास्वामी |
| आदिपुराण | जिनसेन |
| हरिवंश पुराण | जिनसेन |
| उत्तरपुराण | गुणभद्र |
| जैनेन्द्र सिद्धांत कोष | झुल्लक जिनेन्द्र वर्णी |

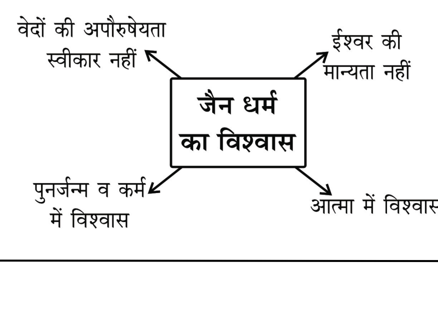

## जैन संगीतियाँ

| संगीति | काल | स्थल | अध्यक्ष |
|---|---|---|---|
| प्रथम | 300 ई.पू. | पाटलिपुत्र | स्थूलभद्र |
| द्वितीय | 512 ई. | वल्लभी | देवर्धिगण (क्षमाश्रवण) |

## बौद्ध धर्म

**प्रवर्तक : गौतम बुद्ध**

**गौतम बुद्ध**
- **जन्म :** 563 ई.पू.
- **जन्म स्थल :** लुम्बिनी
- **पिता :** शुद्धोधन (कपिलवस्तु के शाक्य गण के प्रधान)
- **माता :** माया देवी या महामाया (कोलिय वंश)
- **बचपन का नाम :** सिद्धार्थ
- **पालन :** मौसी प्रजापति गौतमी द्वारा
- **पत्नी :** यशोधरा (शाक्य कुल)
- **पुत्र :** राहुल
- **ज्ञान प्राप्ति :** उरुवेला (बोधगया) में निरंजना (फल्गू) नदी तट पर पीपल वृक्ष के नीचे
- **प्रथम उपदेश :** सारनाथ (ऋषिपत्तन) के मृगदाव में
- **बौद्ध संघ में प्रथम महिला :** प्रजापति गौतमी
- **मृत्यु :** 483 ई.पू.
- **मृत्यु स्थल :** मल्लों की राजधानी कुशीनगर (उत्तर प्रदेश) में
- **उपदेश :** पाली भाषा में

| बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित प्रतीक | |
|---|---|
| **घटना** | **प्रतीक** |
| गर्भ | हाथी |
| जन्म | कमल एवं बैल |
| महाभिनिष्क्रमण (गृहत्याग) | अश्व |
| निर्वाण (ज्ञान) | पीपल वृक्ष |
| धर्मचक्र प्रवर्तक (प्रथम उपदेश) | चक्र |
| महापरिनिर्वाण (मृत्यु) | स्तूप |

■ महापरिनिर्वाण सूत्र के अनुसार बुद्ध की शरीर-धातु (भस्मावेष) के आठ दावेदारों के नाम इस प्रकार मिलते हैं।

1. पावा तथा कुशीनारा के मल्ल
2. कपिलवस्तु के शाक्य
3. वैशाली के लिच्छवी
4. अलकप्प के बुलि
5. रामगाम के कोलिय
6. पिप्पलिवन के मोरिय
7. मगध नरेश अजातशत्रु
8. वेठद्वीप के ब्राह्मण

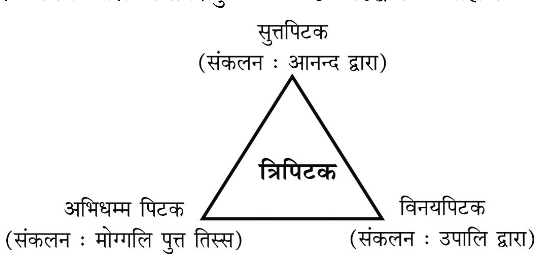


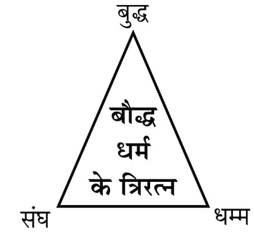


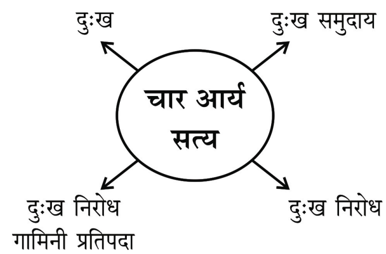


⇒ दुःखों से मुक्ति का उपाय अष्टांगिक मार्ग है

⇓

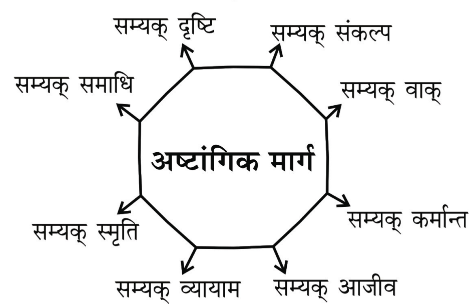


### बौद्ध संगीतियाँ

| क्रम | काल | स्थान | अध्यक्ष | शासक |
|---|---|---|---|---|
| **प्रथम** | 483 ई.पू. | राजगृह | पूरण महाकस्सप | अजातशत्रु |
| **द्वितीय** | 383 ई.पू. | वैशाली | सर्वकामी | कालाशोक (काकवर्णी) |
| **तृतीय** | 247 ई.पू. | पाटलिपुत्र | मोग्गलिपुत्त तिस्स | अशोक |
| **चतुर्थ** | ईसा की प्रथम शताब्दी | कुण्डलवन (कश्मीर) | वसुमित्र (उपाध्यक्ष : अश्वघोष) | कनिष्क |

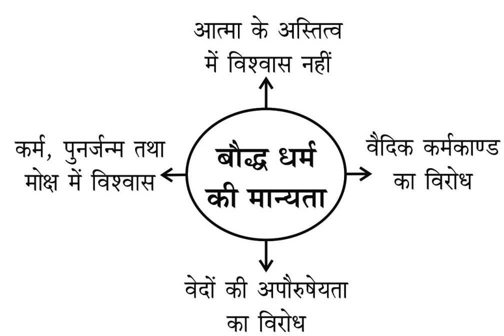

| बुद्ध के समकालीन अनुयायी शासक | |
|---|---|
| **शासक** | **राज्य** |
| बिम्बिसार, अजातशत्रु | मगध |
| प्रसेनजीत | कोशल |
| उदयन | वत्स |
| भद्रिक | शाक्य नरेश |
| अवन्ति पुत्र | शूरसेन (मथुरा) |
| बोधि कुमार | सुसुमारगिरि भग्ग |

■ यह पालि भाषा में रचित है

| |
|---|
| **त्रिपिटक** : सुत्तपिटक, विनय पिटक अभिधम्म पिटक। |
| **सुत्तपिटक**- (संकलन : आनंद द्वारा) यह बौद्ध धर्म के सिद्धांतों, बुद्ध की शिक्षाओं और उपदेशों का संग्रह है। |
| **विनय पिटक-** (संकलन : उपालि द्वारा) यह संघ संबंधी नियमों, आचारों-विचारों और विधि-निषेधों का संग्रह है। |
| **अभिधम्म पिटक** – (संकलन : मोग्गलिपुत्त तिस्स) यह बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धान्तों का संग्रह है। **अभिधम्म के अंतर्गत सात ग्रंथ सम्मिलित हैं -** धम्म संगणि, धातु कथा, विभंग, पुग्गल, पंचति, कथावत्थु, यमक तथा पट्ठान |

■ सुत्तपिटक के पाँच निकाय है- (1) दीर्घ निकाय (2) मज्झिम निकाय (3) संयुक्त निकाय (4) अंगुत्तर निकाय (5) खुद्दक निकाय।

■ बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएं 'जातक' ग्रन्थों में संकलित हैं, यह पालि भाषा में रचित है।

| प्रमुख बौद्ध ग्रंथ एवं उसके रचनाकार | |
|---|---|
| **साहित्य** | **रचनाकार** |
| बुद्धचरित, सौन्दरानन्द | अश्वघोष |
| मिलिन्दपन्हो (मिलिन्द प्रश्न) | नागसेन |
| माध्यमिक कारिका | नागार्जुन |
| विशुद्धिमग्ग | बुद्धघोष |
| अभिधम्मकोष | वसुबन्धु |
| कथावत्थु | मोग्गलिपुत्त तिस्स |

**बौद्ध धर्म का विभाजन**

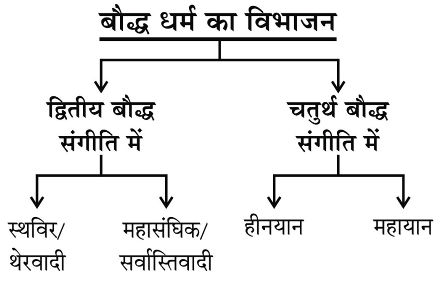


## महाजनपद

⇒ छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक आते-आते छोटे-छोटे जनपद महाजनपदों में तब्दील हो गए।

⇒ 16 महाजनपदों का उल्लेख
- बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय में
- जैन ग्रन्थ भगवती सूत्र में

| 16 महाजनपद | | |
|---|---|---|
| **क्र.सं.** | **महाजनपद** | **राजधानी** |
| **1.** | अंग | चम्पा |
| **2.** | अश्मक | पैठन या पोटन |
| **3.** | अवन्ती | उत्तरी अवंती की : उज्जयनी तथा दक्षिणी अवंती की : माहिष्मती |
| **4.** | गांधार | तक्षशिला या पुष्कलावती |
| **5.** | कंबोज | हाटक या राजपुर |
| **6.** | मगध | गिरिव्रिज या राजगृह |
| **7.** | मत्स्य | विराटनगर |
| **8.** | वज्जि | वैशाली |
| **9.** | चेदि | शुक्तिमती या सोत्थिवती |
| **10.** | काशी | वाराणसी |
| **11.** | कोशल | श्रावस्ती |
| **12.** | कुरु | इन्द्रप्रस्थ |
| **13.** | मल्ल | कुशीनारा व पावा |
| **14.** | पांचाल | अहिच्छत्र (उत्तरी पांचाल की) काम्पिल्य (दक्षिणी पांचाल की) |
| **15.** | शूरसेन | मथुरा |
| **16.** | वत्स | कौशाम्बी |

### बुद्ध कालीन भारत के 10 महत्वपूर्ण गणराज्य

| | | |
|---|---|---|
| वैशाली के | - | लिच्छवी |
| मिथिला के | - | विदेह |
| कुशीनारा के | - | मल्ल |
| पावा के | - | मल्ल |
| रामग्राम के | - | कोलिय |
| कपिलवस्तु के | - | शाक्य |
| पिप्पलिवन के | - | मोरिय |
| अलकप्प के | - | बुलि |
| केसपुत्त के | - | कालाम |
| सुमसुमार गिरी के | - | भग्ग |

**बौद्ध साहित्य के अनुसार मगध के शासक-**

| **वंश** | **शासक** | **शासनकाल** | **उपाधि** |
|---|---|---|---|
| हर्यक वंश (544-412 ई.पू.) | बिंबिसार | 544-492 ई.पू. | श्रेणिक |
| | अजातशत्रु | 492-460 ई.पू. | कुणिक |
| | उदयिन | 460-444 ई.पू. | |
| | उदयिन के उत्तराधिकारी, अनिरूद्ध, मुंडक, नागदशक ने 412 ई. पू. तक शासन किया। | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| शिशुनाग वंश (412-344 ई.पू.) | शिशुनाग | 412-394 ई.पू. | |
| | कालाशोक | 394-366 ई.पू. | |
| | कालाशोक के पश्चात उसके 10 पुत्रों ने 344 ई.पू. तक शासन किया। इस वंश का अंतिम राजा नंदिवर्धन था। | | |
| नंद वंश (344-322 ई.पू.) | महापद्म नन्द धनानन्द | 344-340 ई.पू. | |

## मौर्य एवं मौर्योत्तर काल

### मौर्य वंश

| शासक | शासन अवधि |
|---|---|
| चन्द्रगुप्त मौर्य | 322 ई. पू. - 298 ई. पू. |
| बिन्दुसार | 298 ई. पू. - 273 ई. पू. |
| अशोक | 273 ई. पू. - 232 ई. पू. |
| दशरथ | 232 ई. पू. - 224 ई. पू. |
| सम्प्रति | 224 ई. पू. - 215 ई. पू. |
| शालिसुक | 215 ई. पू. - 202 ई. पू. |
| देववर्मन | 202 ई. पू. - 195 ई. पू. |
| शतधनवन | 195 ई. पू. - 187 ई. पू. |
| बृहद्रथ | 187 ई. पू. - 184 ई. पू. |

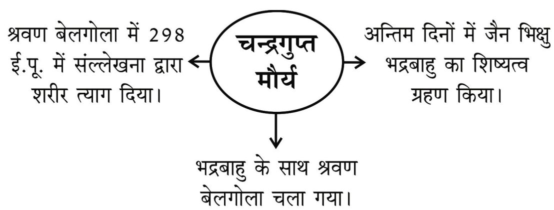


- सिकन्दर के साम्राज्य के पूर्वी भाग के शासक सेल्युकस और चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना के बीच 305 ई.पू. में युद्ध हुआ।
- सेल्युकस ने मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा।
- मेगस्थनीज ने 'इण्डिका' नामक ग्रन्थ लिखा जो मूल स्वरूप में उपलब्ध नहीं है।

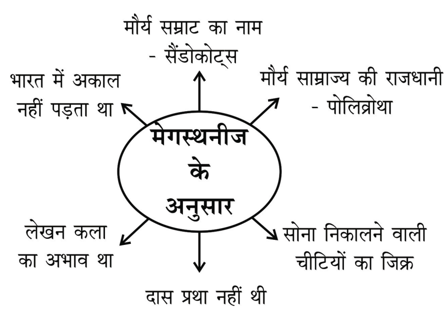


- मेगस्थनीज के अनुसार भारत में सात प्रकार की जातियाँ हैं- 1. दार्शनिक, 2. कृषक, 3. पशुपालक, 4. कारीगर, 5. योद्धा, 6. निरीक्षक, 7. सभासद
- चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित कौटिल्य (विष्णुगुप्त या चाणक्य) था। कौटिल्य ने 'राजशासन' के ऊपर प्रसिद्ध ग्रन्थ 'अर्थशास्त्र' की रचना की।
- अर्थशास्त्र में राज्य के शासन हेतु 'सप्तांग सिद्धांत' का जिक्र है।

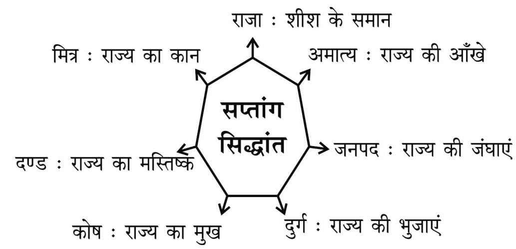


- बिन्दुसार ने सीरिया के शासक एंटियोकस से तीन वस्तुओं 1. मीठी मदिरा, 2. सूखी अंजीर, 3. एक दार्शनिक की माँग की थी।

**अशोक (273-232 ई.पू.)**
- **माता** - सुभद्रांगी
- **पिता** - बिन्दुसार
- **प्रचलित नाम** - देवानांपियदसि
- **राज्याभिषेक** - 269 ई.पू. (राज्यारोहण के चार वर्ष बाद)
- **अभिलेख की भाषा** - प्राकृत
- **अभिलेख की लिपि** - ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामाइक, यूनानी
- **'अशोक' नाम का उल्लेख** - मास्की, गुर्जरा, नेत्तूर, उदयगोलम अभिलेख में

**अशोक के अभिलेखों का विभाजन**
- **शिलालेख**
  - दीर्घ शिलालेख : (संख्या 14) 10 स्थानों से प्राप्त
  - लघु शिलालेख
- **स्तम्भलेख (7)** : 1. लौरिया-अरराज, 2. लौरिया-नंदनगढ़, 3. रामपुरवा, 4. दिल्ली-टोपरा, 5. दिल्ली-मेरठ, 6. प्रयाग, 7. संकिसा
- **गुहालेख**

**14 दीर्घ शिलालेख**

| क्रम | विषय |
|---|---|
| 1. | जीव हत्या का निषेध |
| 2. | चोल, पाण्ड्य, सतियपुत्त, केरलपुत्र, ताम्रपर्णि, यवन राजा, एंटीओक और उसके पड़ोसियों के राज्यों में भी मनुष्यों व पशुओं की चिकित्सा |
| 3. | युक्त, रज्जुक व प्रादेशिक नामक तीन नए अधिकारियों की नियुक्ति |
| 4. | भेरी घोष, धम्म घोष में बदल गया। |
| 5. | राज्याभिषेक के 13वें वर्ष धम्म महामात्रों की नियुक्ति |
| 6. | प्रतिवेदकों को प्रजा का हाल बताने का आदेश |

| | |
|---|---|
| 7. | सभी सम्प्रदाय के लोग सब जगह निवास करें |
| 8. | अशोक द्वारा धम्म यात्राओं का प्रारम्भ |
| 9. | 'धम्म मंगल' सर्वश्रेष्ठ घोषित |
| 10. | धम्म नीति की श्रेष्ठता पर बल |
| 11. | धम्म दान का उल्लेख |
| 12. | धार्मिक सहिष्णुता पर बल |
| 13. | कलिंग विजय (261 ई.पू.) का वर्णन |
| | • 5 यवन राजाओं का उल्लेख<br>• चोल, पाण्ड्य, सत्तियपुत्त, केरलपुत्त एवं ताम्रपर्णि का उल्लेख |
| 14. | सभी लेखों हेतु उपसंहार स्वरूप है |

| 14 दीर्घ शिलालेख ( प्राप्ति स्थल ) | अवस्थिति |
|---|---|
| गिरनार | जूनागढ़, गुजरात |
| शाहबाजगढ़ी | पेशावर, पाकिस्तान |
| धौली | पुरी, ओडिशा |
| जौगढ़ | गंजाम, ओडिशा |
| कालसी | देहरादून, उत्तराखण्ड |
| सोपारा | ठाणे, महाराष्ट्र |
| मानसेहरा | हाजरा, पाकिस्तान |
| एर्रगुडी | कुर्नूल, आंध्र प्रदेश |
| कंधार | अफगानिस्तान |
| सन्नती | गुलबर्गा, कर्नाटक |

**13वें शिलालेख में वर्णित पाँच यवन राजा**

| देश | यवन राजा |
|---|---|
| (1) मिस्र | टॉलमी फिलाडेल्फस द्वितीय (तुरमय) |
| (2) एपिरस | एलेक्जेंडर (अलिकसुंदर) |
| (3) साइरीन | मैगस (मग) |
| (4) मेसीडोनिया | एंटीगोनस गोनाट्स (अंतकिन) |
| (5) सीरिया | एंटीयोकस द्वितीय (अंतियोक) |

### मौर्य प्रशासन की इकाई

साम्राज्य
⇓
प्रांत (उपराजा द्वारा नियंत्रित)
⇓
मण्डल (प्रदेष्टा द्वारा)
⇓
आहार या विषय (विषयपति द्वारा)
⇓
स्थानीय (800 ग्रामों का समूह)
⇓
द्रोणमुख (400 ग्रामों का समूह)
⇓
खार्वटिक (200 ग्रामों का समूह)
⇓
संग्रहण (10 ग्रामों का समूह)
⇓
ग्राम (सबसे छोटी इकाई)

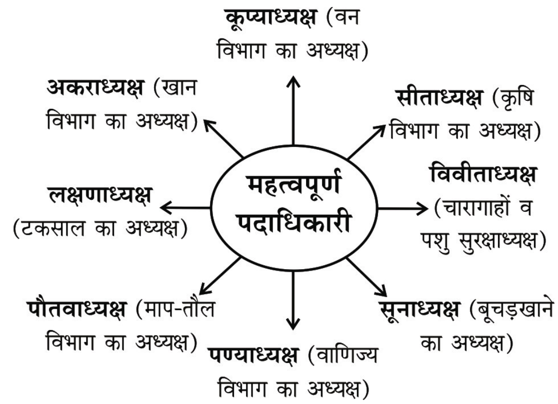


| केन्द्रीय प्रशासन के प्रत्येक विभाग का प्रमुख तीर्थ के नाम से जाना जाता था जिनकी संख्या 18 थी | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | प्रधानमंत्री (पुरोहित) | 10 | कर्मांतिक (उद्योग मंत्री) |
| 2. | युवराज (राजा का उत्तराधिकारी) | 11. | दुर्गपाल (देश के भीतर दुर्ग की देखभाल करने वाला प्रमुख |
| 3. | समाहर्ता (राजस्व मंत्री) | 12. | नागरक (नगरों की व्यवस्था का प्रमुख) |
| 4. | सन्निधाता (कोषाध्यक्ष) | 13. | प्रशास्ता (राजकीय दस्तावेजों को सुरक्षित करने वाला प्रमुख) |
| 5. | सेनापति (सैन्यमंत्री) | 14. | दौवारिक (राजप्रसादों का अधिकारी) |
| 6. | प्रदेष्टा (फौजदारी न्यायालयों का न्यायाधीश) | 15. | अंतर्वशिक (राजा की निजी अंगरक्षक सेना का प्रमुख) |
| 7. | व्यावहारिक (दीवानी न्यायालयों के न्यायाधीश) | 16. | आटविक (वन विभाग का प्रमुख) |
| 8. | दण्डपाल (सैन्य संसाधन एकत्र करने वाला) | 17. | मंत्रीपरिषदाध्यक्ष (मंत्रि परिषद् का प्रमुख) |
| 9. | अंतपाल (सीमांत प्रदेशों के दुर्गों की देखभाल करने वाला प्रमुख) | 18. | नायक (सेना का संचालनकर्ता) |

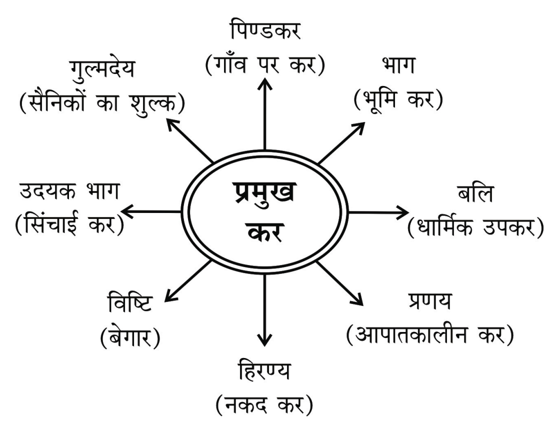

- गुजरात के गिरनार में स्थित सुदर्शन झील के निर्माण व मरम्मत से सम्बन्धित प्रांतपति व शासक -

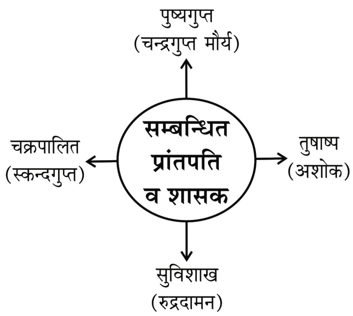


## मौर्योत्तर काल

| वंश | संस्थापक | राजधानी | अंतिम शासक |
|---|---|---|---|
| शुंग वंश | पुष्यमित्र शुंग | पाटलिपुत्र | देवभूति |
| कण्व वंश | वसुदेव कण्व | | सुशर्मा |
| सातवाहन | सिमुक या सिंधुक | प्रतिष्ठान या पैठन (आरम्भिक राजधानी अमरावती) | पुलुमावि चतुर्थ |
| वाकाटक | विन्ध्यशक्ति | पुरी (बरार) | |
| कदंब वंश | मयूर शर्मन | बनवासी | हरिवर्मन |
| चेदि | महामेघवाहन | कलिंग | महाराजा कुदेय |

## संगम युग

- संगम युग में तमिल क्षेत्र के तीन राज्य चोल, चेर तथा पाण्ड्य का शासन था।

### संगम राज्य

| राज्य | राजधानी | वर्तमान क्षेत्र | राजकीय चिह्न | महत्वपूर्ण शासक |
|---|---|---|---|---|
| चोल | प्रारम्भिक राजधानी उत्तरी मनलूर थी, तत्पश्चात् उरैयुर तथा तंजौर (तंजावुर) राजधानी बनी | तमिलनाडु का मध्य व उत्तरी क्षेत्र | बाघ | करिकाल |
| चेर | वांजी/वांची | केरल का मध्य व उत्तरी क्षेत्र | धनुष | उदियनजेरल, शेनगुट्टवन |
| पाण्ड्य | मदुरै (प्रारम्भिक राजधानी कोरकई) | मदुरै क्षेत्र | मछली | नेडियोन, नेडुंजेलियन |

- पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में तीन संगम का आयोजन किया गया।

| संगम | स्थान | अध्यक्ष | संकलन |
|---|---|---|---|
| प्रथम | मदुरै | अगस्त्य ऋषि | वर्तमान में एक भी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं। |
| द्वितीय | कपाटपुरम | अगस्त्य ऋषि तथा तोल्काप्पियर | एकमात्र ग्रन्थ तोल्काप्पियम उपलब्ध है। |
| तृतीय | मदुरै | नक्कीरर | कई ग्रन्थ उपलब्ध हैं। |

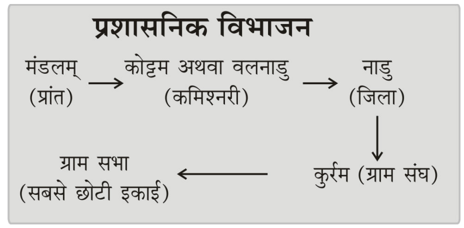


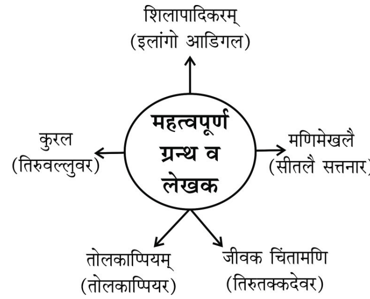


## गुप्त वंश

- गुप्त वंश ने लगभग 275-550 ई. तक शासन किया

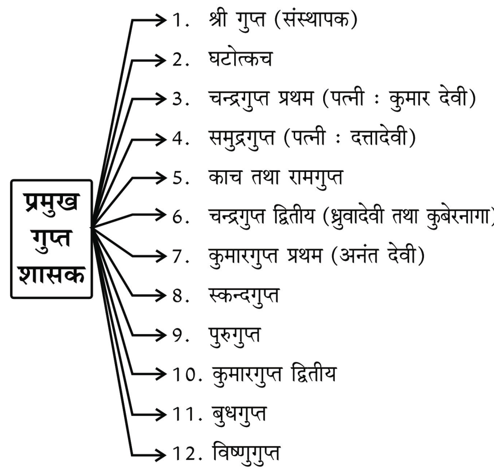


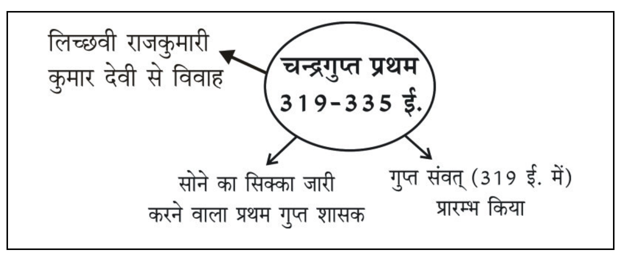


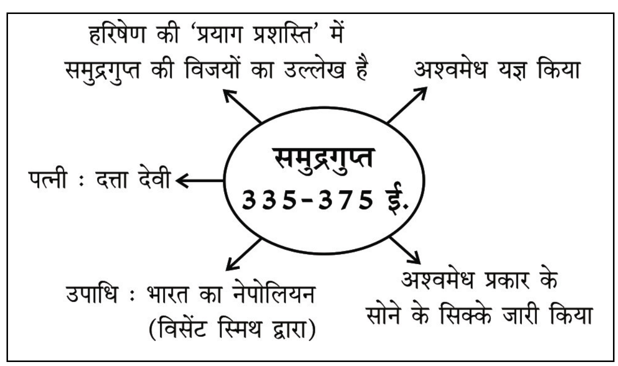

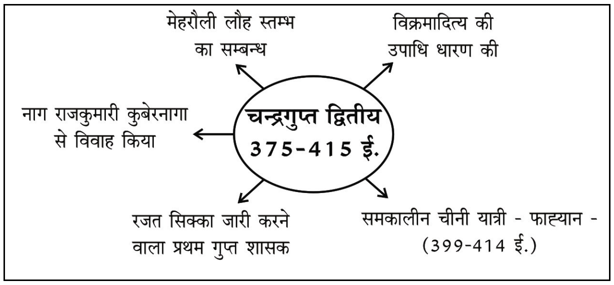


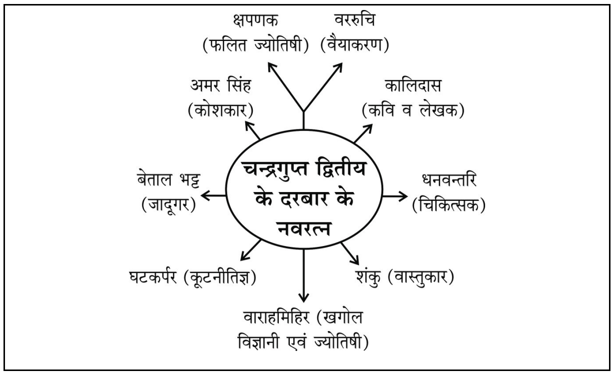


- स्कन्दगुप्त ने हूणों को अंतिम रूप से पराजित किया।

**प्रयाग प्रशस्ति**

- अशोक, बीरबल (माघ मेला वर्णन), जहाँगीर का लेख भी उत्कीर्ण
- ब्रह्मी लिपि और संस्कृत भाषा में रचित है।
- समुद्रगुप्त को धरणिबन्धः धर्मप्राचीरबन्धः, लिच्छविदौहित्र, पृथिव्यांम प्रतिरथ तथा कविराज कहा गया।
- समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त की तीन शक्तियों अच्युत, नागसेन तथा कोतकुलज को पराजित किया (13वीं - 14वीं पंक्ति)
- समुद्रगुप्त ने ग्रहणमोक्षानुग्रह नीति के तहत दक्षिणापथ के 12 राज्यों को जीता फिर उनका राज्य वापस कर दिया (19वीं, 20वीं पंक्ति)
- समुद्रगुप्त ने -प्रसभोद्धरण नीति के तहत उत्तर भारत के नौ राज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया। (21वीं पंक्ति)
- आटविक राज्यों का उल्लेख (21वीं पंक्ति)
- 22वीं पंक्ति में 5 सीमावर्ती राज्यों : कामरूप, डवाक, समतट, कर्तृपुर तथा नेपाल का उल्लेख है।

## गुप्तकालीन महत्वपूर्ण अभिलेख

| | |
|---|---|
| **कुमारगुप्त कालीन** | • धनदैह ताम्रपत्र (राजशाही, बांग्लादेश)<br>• बैग्राम ताम्रपत्र (बोगरा, बांग्लादेश)<br>• दामोदर ताम्रपत्र (दीनाजपुर, बांग्लादेश)<br>• वत्सभट्टि रचित मन्दसौर अभिलेख (प्राचीन मालवा)<br>• गढ़वा अभिलेख (प्रयागराज, उ.प्र.)<br>• करमदण्डा अभिलेख (एटा, उ.प्र.)<br>• मनकुँवर अभिलेख (प्रयागराज, उ.प्र.)<br>• तुमैन अभिलेख (ग्वालियर, म.प्र.) |
| **स्कन्दगुप्त कालीन** | • जूनागढ़ अभिलेख (सौराष्ट्र, गुजरात)<br>• भीतरी स्तम्भ लेख (गाजीपुर, उ.प्र.)<br>• सूपिया अभिलेख (रीवां, म.प्र.)<br>• एरण अभिलेख (सागर, म.प्र.) |

**प्रशासनिक इकाई** : भुक्ति/भोग (प्रांत) → विषय (जिला) → वीथि (नगर) → ग्राम (गाँव)

**प्रमुख** : उपरिक/भोगपति, विषयपति, वीथिमहत्तर, ग्रामिक

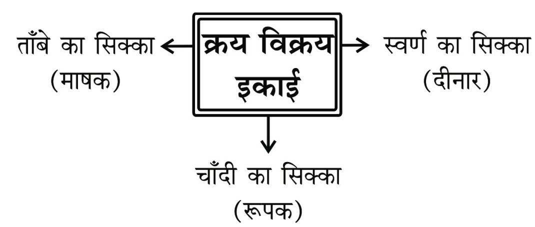


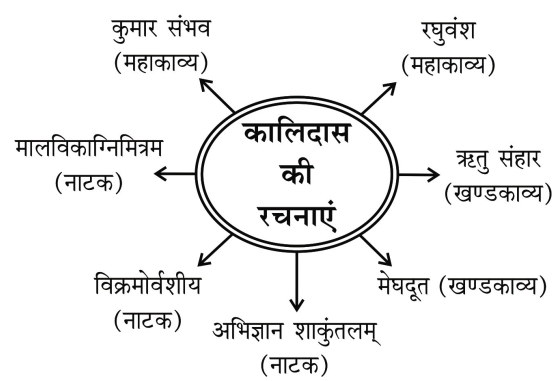


- भारत में मन्दिर निर्माण कला का आरम्भ गुप्तकाल में हुआ

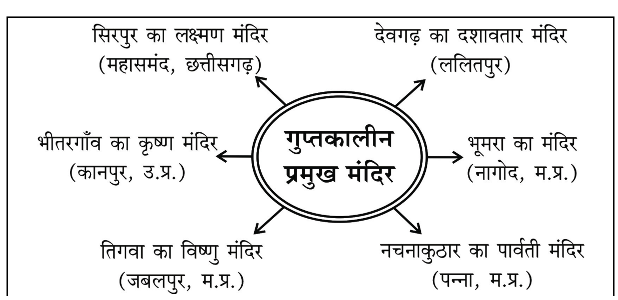

## साहित्य एवं ग्रन्थ

| | लेखक | - | ग्रन्थ |
|---|---|---|---|
| (1) | आर्यभट्ट | - | आर्यभट्टीयम्<br>आर्याष्टाशतक<br>दशगीतिक सूत्र<br>सूर्य सिद्धांत |
| (2) | भास्कराचार्य (भास्कर II) | - | सिद्धांत शिरोमणि (इसके चार भाग हैं : बीजगणित, गृहगणिताध्याय,गोलाध्याय, लीलावती) |
| (3) | वराहमिहिर | - | पंचसिद्धांतिका |
| | | - | वृहत संहिता |
| | | - | बृहज्जातक |
| | | - | योगमाया |
| (4) | ब्रह्मगुप्त | - | ब्रह्म सिद्धांत |
| | | - | खण्डखाद्य |
| (5) | विष्णुशर्मा | - | पंचतंत्र |
| (6) | भर्तृहरि | - | नीतिशतक |
| | | - | शृंगारशतक |
| | | - | वैराग्य शतक |
| (7) | सुबन्धु | - | वासवदत्ता |
| (8) | अमरसिंह | - | अमरकोश (नामलिङ्.गानुशासनम्) |
| (9) | चण्ड | - | प्राकृत लक्षण |
| (10) | वररूचि | - | प्राकृत प्रकाश |
| (11) | कालिदास | - | कुमार संभव (महाकाव्य) |
| | | - | रघुवंश (महाकाव्य) |
| | | - | ऋतुसंहार (खण्डकाव्य) |
| | | - | मेघदूत (खण्डकाव्य) |
| | | - | अभिज्ञान शाकुंतलम् (नाटक) |
| | | - | विक्रमोर्वशीयम् (नाटक) |
| | | - | मालविकाग्निमित्रम (नाटक) |
| (12) | विशाखदत्त | - | मुद्राराक्षस |
| | | - | देवीचंद्रगुप्तम् |
| (13) | शूद्रक | - | मृच्छकटिकम |

## वर्द्धन वंश

### संस्थापक - पुष्यभूति

| शासक | शासनकाल | विशेष |
|---|---|---|
| पुष्यभूति | लगभग 500 ई. | वर्द्धन वंश का संस्थापक |
| नरवर्द्धन | 500-525 ई. | बांसखेड़ा व मधुवन लेख के अनुसार इस वंश का प्रथम शासक था। |
| राज्यवर्द्धन I | 525-555 ई. | |
| आदित्यवर्द्धन | 555-580 ई. | मगध के राजा दामोदर गुप्ता की पुत्री से विवाह किया था। |
| प्रभाकरवर्द्धन | 580-605 ई. | यशोमती (हर्ष की माँ) इसकी प्रधान रानी थी। |
| राज्यवर्द्धन II | 605-606 ई. | गौड़ नरेश शशांक ने इसकी हत्या कर दी। |
| हर्षवर्द्धन | 606-647 ई. | हर्ष ने प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानंद नामक संस्कृत के तीन नाटक लिखे। |

**हर्षवर्द्धन**
- शासनकाल : 606-647 ई.
- पिता : प्रभाकरवर्द्धन
- माता : यशोमती
- उपनाम : शिलादित्य
- उपाधि : सकलोत्तर पथनाथ
- रचनाएं : प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानंद
- राजधानी : कन्नौज या महोदयाश्री (पहले थानेश्वर थी)

एहोल अभिलेख के अनुसार हर्ष और पुलकेशिन द्वितीय के मध्य लड़े गए युद्ध में पुलकेशिन द्वितीय विजयी रहा।

**चीनी यात्री ह्वेनसांग**
- यात्रा काल : 629-645 ई.
- यात्रा विवरण : सि-यू-की नामक ग्रन्थ में
- हर्ष की राजधानी कन्नौज में आगमन : 636 ई.

## चालुक्य वंश

- दक्कन में वाकाटकों के पश्चात् बादामी या वातापी के चालुक्य सत्ता में आए।

**बादामी के चालुक्य**
- संस्थापक : जयसिंह
- वास्तविक संस्थापक : पुलकेशिन प्रथम
- → वेंगी के चालुक्य (संस्थापक : विष्णुवर्द्धन प्रथम)
- → कल्याणी के चालुक्य (संस्थापक : तैल द्वितीय)

**पल्लव वंश**
- संस्थापक : सिंहवर्मा (कुछ इतिहासकार बप्पदेव को मानते हैं)
- राजधानी : कांची
- अंतिम शासक : अपराजित वर्मन

**प्रमुख पल्लव शासक**
- **सिंह विष्णु** (575-600 ई.) : 'किरातार्जुनीयम' के लेखक भारवि दरबार में था।
- **महेन्द्र वर्मन प्रथम** (600-630 ई.) : एकाश्म मंदिर निर्माण की शुरुआत
  : संस्कृत नाटक 'मत्त विलास-प्रह्सन' की रचना की
- **नरसिंह वर्मन प्रथम** (630-668 ई.) : 642 ई. में चालुक्यों की राजधानी बादामी पर अधिकार कर लिया।
  : 'वातापी कोंड' तथा 'महामल्ल' की उपाधि धारण की।
  : महाबलीपुरम (मामल्लपुरम) के रथ मंदिर का शुभारम्भ
- **नरसिंह वर्मन द्वितीय** (695-720 ई.) : मंदिर निर्माण की नई शैली 'राजसिंह शैली' का प्रयोग किया।
  : कांची के 'कैलाशनाथ मंदिर' तथा 'महाबलिपुरम के तटीय मंदिर' का निर्माण करवाया।
  : 'दशकुमारचरित' का लेखक दण्डिन दरबार में था

**चोल वंश**

- संस्थापक : विजयालय (850-871 ई.)
- अंतिम शासक : राजेन्द्र तृतीय
- राजधानी : तंजावुर (बाद में गंगैकोण्ड चोलपुरम्)

**चोल प्रशासन की विशेषता**

- ग्राम प्रशासन की स्वायत्तता
- गाँवों की गतिविधियों की देखरेख हेतु समितियों की स्थापना किया जिसे 'वरियम्' कहा जाता था।

**प्रमुख समितियाँ**

- एरि वारियम (तालाब समिति)
- पोन वारियम (स्वर्ण समिति)
- तोट्ट वारियम (उद्यान समिति)
- उदासीन वारियम (विदेशियों की देखरेख हेतु)

**प्रमुख चोल शासक**

- **परान्तक I** (907-955 ई.) : पल्लवों का पूर्ण उन्मूलन किया (उपाधि-मदुरैकोण्ड)
  : 949 ई. में तक्कोलम का युद्ध (राष्ट्रकूट कृष्ण III से) हुआ; जिसमें परान्तक I पराजित हुआ।
- **राजराज I** (985-1014 ई.) : तंजावुर में वृहदीश्वर या राजराजेश्वर मंदिर बनवाया।
- **राजेन्द्र I** (1014-1044 ई.) : गंगा जल लाने हेतु पाल शासक महिपाल तथा पूर्वी गंग शासक को पराजित कर 'गंगैकोण्ड' की उपाधि धारण किया।
  : गंगैकोण्ड चोलपुरम् में वृहदीश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।
- **कुलोतुंग II** (1133-1150 ई.) : चिदम्बरम नटराज मंदिर से गोविन्दराज की मूर्ति को हटवाकर समुद्र में फेंकवा दिया।

********

# मध्यकालीन इतिहास

**800 से 1200 ई. तक उत्तर भारत**

**त्रिपक्षीय संघर्ष**
- शामिल हुए : गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट तथा पाल
- कारण : कन्नौज पर आधिपत्य जमाने के लिए
- संघर्ष काल : लगभग 100 वर्ष
- अंतिम विजय : गुर्जर - प्रतिहारों की

**गुर्जर प्रतिहार वंश**
- संस्थापक : नागभट्ट प्रथम (730 ई.)
- राजधानी : भीनमाल
- त्रिकोणीय संघर्ष प्रारम्भ : वत्सराज के समय
- महमूद गजनवी के आक्रमण के समय गुर्जर प्रतिहार शासक राज्यपाल था

**राष्ट्रकूट वंश**
- संस्थापक : दंतिदुर्ग (752 ई.)
- राजधानी : मान्यखेत
- एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण : कृष्ण प्रथम
- अंतिम शासक : कर्क द्वितीय

**पाल वंश**
- संस्थापक : गोपाल (750 ई.)
- विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की : धर्मपाल
- अंतिम शासक : गोविन्द पाल

**पैगंबर हजरत मोहम्मद**
- **जन्म :** 570 ई.
- **जन्म स्थान :** मक्का (सऊदी अरब में)
- इस्लाम धर्म के प्रवर्तक थे
- **मृत्यु :** 632 ई.

**भारत पर मुस्लिम आक्रमण**
- मुहम्मद बिन कासिम (712 ई. में भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम अरबी मुस्लिम शासक)
- महमूद गजनवी
- मुहम्मद गोरी

**महमूद गजनवी (998-1030 ई.)**
- गजनी के शासक सुबुक्तगीन का पुत्र था।
- भारत पर आक्रमण किया : 17 बार (1000 से 1027 के मध्य)
- सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण : 1026 ई. में
- दरबारी विद्वान (पुस्तक) : अलबरूनी (किताब-उल हिन्द)
  : उत्बी (किताब-उल-यामिनी)
  : फिरदौसी (शाहनामा)
  : बैहाकी (तारीख-ए-सुबुक्तगीन)
- महमूद गजनवी का चंदेलों पर प्रथम आक्रमण 1019-20 ई. में विद्याधर के समय हुआ।
- इसके द्वारा जारी चाँदी के सिक्कों के ऊपरी भाग पर अरबी भाषा में मुद्रालेख तथा दूसरी तरफ अंकित मुद्रालेख संस्कृत भाषा में था।

**अल्बरुनी**
- **जन्म** → 973 ई.
- **निवासी** → खीवा (प्राचीन ख्वारिज्म प्रांत का)
- **रचना की** → अरबी भाषा में 'तहकीक-ए-हिन्द' की
- **पुराणों का अध्ययन करने वाला प्रथम मुसलमान था**